अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

अंक : 5

सितम्बर 2023

जन सरोकार और सामाजिक संगठन

वर्ष: 68 अंक: 12

सितम्बर 2023

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

भौतिकवाद के इस युग में जबकि जनसाधारण का जीवन नैतिक ह्रास और पतन की ओर जा रहा है, यह सर्वथा उपयुक्त है कि उस पतन को रोका जाये और लोगों के सम्मुख नैतिकता के महान समृद्ध आदर्शों को प्रस्तुत किया जाये। ऐसा आदर्श प्रस्तुत करने का भगीरथ कार्य अणुव्रत आंदोलन कर रहा है। अपेक्षा है कि जनता इस अभियान को समझे और अपने जीवन में पवित्र ज्योति जगाये।

- विद्यारत्न तीर्थ श्रीपादा

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2.
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

सामाजिक संस्थान और प्रासंगिकता के मानदण्ड

व्यक्ति का आचार-विचार समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है तो सामाजिक परिवेश व्यक्ति की जीवनशैली को प्रभावित करता है। और, इन दोनों अन्तर्सम्बन्धों के मध्य सन्तुलन का परिमाण समाज के स्वरूप और उसकी दिशा का निर्धारण करता है।

व्यक्ति और समाज के मध्य सन्तुलन को साधने और बनाये रखने की अपेक्षा ने ही सम्भवतः सामाजिक संगठनों की व्युत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त किया होगा। सामाजिक संस्थाओं और संगठनों, जिन्हें सिविल सोसायटी के रूप में भी जाना जाता है, की प्राथमिकता में समाज हित या परहित के आदर्श सर्वोच्च स्थान पर हैं या नहीं, यह उसकी प्रासंगिकता का महत्वपूर्ण मानदण्ड है क्योंकि कभी-कभी ऐसी संस्थाओं का निर्माण संकुचित और स्वार्थपूरित उद्देश्यों से भी कर दिया जाता है, जहाँ नेक उद्देश्यों के मुखौटे के पीछे व्यक्तिगत या एक समूह का स्वार्थ सिद्ध किया जाता है। दूसरी तरफ, ऐसे लोग भी होते हैं जिनके लिए सामाजिक संस्थाओं से जुड़ना पद, नाम या सत्ता हासिल करना मात्र होता है। इस उद्देश्य को पाने के लिए वे पानी की तरह धन बहाने से भी परहेज नहीं करते। सेवा के नाम पर यह कलंक नहीं तो और क्या है?

अणुव्रत आन्दोलन सिविल सोसायटी का एक सुन्दर उदाहरण है। व्यक्ति और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के पवित्र उद्देश्य के साथ यह आन्दोलन गत 75 वर्षों से सक्रिय है। जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से ऐसे आन्दोलनों से जुड़ता है, जनहित के साथ-साथ उसका स्व-कल्याण स्वतः स्फूर्त सिद्ध हो जाता है।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

■ प्रेरणा पाथेय ■

मूल्यों का प्रतिष्ठाता व्यक्ति या समाज

■ आचार्य तुलसी

यह तो निश्चित बात है कि नैतिक मूल्य की प्रतिष्ठा समाज के सन्दर्भ में है। उन मूल्यों का प्रतिष्ठाता व्यक्ति होता है क्योंकि व्यक्ति के बिना समाज का अस्तित्व ही कहाँ रहता है। व्यक्ति का पहला कर्त्तव्य यह है कि वह सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में पूरा-पूरा योगदान करे। कोई भी मूल्य निर्धारित हो और व्यक्ति उसे विघटित करता चला जाये तो वह समाज में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता। समाज को सुदृढ़ बनाना, उसे अधिक उपयोगी प्रमाणित करना तथा उसमें संभावित दुर्बलताओं को दूर करने के लिए सतत जागरूक रहना व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

वहीं, समाज का कर्त्तव्य यह है कि वह ऐसी परिस्थिति निर्मित करे, जो व्यक्ति को मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु अपना सहयोग दे सके। मूल्य-प्रस्थापना की दिशा में परिस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुभूत परिस्थिति असंभव को संभव बनाकर दिखा सकती है। मूल्यों की प्रस्थापना जितनी व्यक्ति और समाज सापेक्ष है, उतनी ही परिस्थिति सापेक्ष है। तीनों का समुचित संयोग ही किसी मूल्य को प्रतिष्ठा दे सकता है। परिस्थिति के निर्माण का मूलभूत दायित्व आता है समाज पर और उस निर्मित परिस्थिति में किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित न हो, यह प्रयत्न करने की जिम्मेदारी है व्यक्ति की। व्यक्ति यदि उस मूल्य से प्रतिकूल आचरण करता है तो वह अपने कर्त्तव्य से च्युत होता है।

नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में सबसे बड़ी बाधा है चारित्रिक निष्ठा का अभाव। निष्ठा का बल जिस व्यक्ति में नहीं होता, वह किसी भी स्थिति में विचलित हो सकता है। वहीं, व्यक्ति

व्यक्ति की आर्थिक व्यवस्था अनुकूल नहीं होती है तो वह मूल्यों को विघटित कर देता है क्योंकि मूल्यों की स्थापना समता के धरातल पर ही हो सकती है।

की आर्थिक व्यवस्था अनुकूल नहीं होती है तो वह मूल्यों को विघटित कर देता है क्योंकि मूल्यों की स्थापना समता के धरातल पर ही हो सकती है। आर्थिक विषमता व्यक्ति के मन में द्वन्द्व उपस्थित करती है। मन का द्वन्द्व वाणी और व्यवहार दोनों माध्यमों से अभिव्यक्त होता है। ऐसी अभिव्यक्ति मनुष्य के चारों ओर तदनुरूप वलय निर्मित करती है। वह वलय जब अधिक ठोस हो जाता है, तब व्यक्ति के मानस में नैतिक-अनैतिक का विवेक नहीं रह पाता। फलतः वह नैतिक मूल्यों का विघटन कर देता है।

राजनैतिक परिस्थितियां भी निमित्त बन सकती हैं। युद्ध मानवीय सभ्यता के लिए विनाशकारी तत्त्व है। इससे मनुष्य जाति और संपदा का ही विनाश नहीं होता, सभ्यता और संस्कृति का भी लोप हो जाता है। भारतवर्ष का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है। यहाँ की विकासमान स्थितियां महाभारत के युद्ध के बाद अधिक क्षतिग्रस्त हुई हैं। महाभारत से पहले और पीछे की भारतीय आत्मा में बहुत बड़ा अन्तर दिखायी दे रहा है।

मूल्य दो प्रकार के होते हैं - शाश्वत और सामयिक। शाश्वत मूल्य स्वरूप की दृष्टि से अपरिवर्तनीय होते हैं। सामयिक मूल्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और परिस्थिति सापेक्ष हैं, अतः बदलते रहते हैं। अज्ञान की अवस्था में स्थापित मूल्यों में तद्विषयक ज्ञान होते ही एक बदलाव आ जाता है। यह नैसर्गिक प्रक्रिया है।

वैज्ञानिक उन्नति से नैतिक मूल्यों की मूलभूत आस्था में कोई

बदलाव नहीं आता। पर अज्ञानजनित आस्था निश्चित रूप से बदलती है और उसे बदलना भी चाहिए। क्योंकि सत्य की खंडित आस्था भी एक प्रकार से व्यक्ति को गुमराह करती है। जो वैज्ञानिक उन्नति व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाती है, वह नैतिक मूल्यों की विघटक नहीं हो सकती तथा जिस उन्नति से सत्य की आस्था खंडित होती है, वह सही अर्थ में वैज्ञानिक उन्नति नहीं हो सकती।

कला और साहित्य भी मूल्य-परिवर्तन के हेतु हैं क्योंकि इनमें ऐसी क्षमता है, जो मनुष्य के मन को आकृष्ट करती है। जो आकृष्ट करता है, वह बदलाव में भी निमित्त बनता है। इस सन्दर्भ में जो परिवर्तन होते हैं, वे अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इसलिए मैं तो यही सोचता हूँ कि रूढ़ मूल्य केवल लाभदायक ही नहीं होते। जिस सीमा तक वे उपयोगी हैं, उनका अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। उपयोगिता समाप्त होने के बाद भी उनसे चिपके रहना समझदारी नहीं है। इसलिए नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और उसमें उपस्थित बाधा दोनों स्थितियों को सापेक्ष दृष्टि से समझना चाहिए।

मैं तो यही सोचता हूँ कि रूढ़ मूल्य केवल लाभदायक ही नहीं होते। जिस सीमा तक वे उपयोगी हैं, उनका अतिक्रमण नहीं होना चाहिए।

साहित्य समाज में भावों का दर्पण है, समूह-चेतना के बिम्बों को उभारने का माध्यम है, पर साहित्य के द्वारा सब कुछ बदल जाने की बात बहुत कठिन है। क्योंकि कुछ-कुछ साहित्यकार ही ऐसे होते हैं, जो समग्र समाज को आंदोलित कर सकते हों।

साहित्यकार की चेतना जागृत हो, वह अपने दायित्व के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हो और निरपेक्ष भाव से अपने मौलिक चिन्तन की प्रस्तुति देने की क्षमता रखता हो तो समाज की चेतना पर भी उसका अमिट प्रभाव हो सकता है।

अणुव्रत के संदर्भ में आचार्य श्री महाप्रज्ञ के ये विचार वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं का सटीक समाधान प्रस्तुत करते हैं। सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

विश्व समाज में सिविल सोसायटी की भूमिका

ललित गर्ग, दिल्ली

सिविल सोसायटी अर्थात् नागरिक समाज नागरिकों की स्वयं के लिए स्वयं की व्यवस्था है। जर्मन दार्शनिक हेगेल ने नागरिक समाज शब्द गढ़ा था। एक नागरिक समाज में लोग समाज के कल्याण के वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने या लोगों की समस्याओं को राज्य के समक्ष उठाने या स्वयं के स्तर पर समाधान का प्रयत्न करने के लिए स्वेच्छा से एक साथ आते हैं। मूलतः राज्य की रिक्तता को नागरिक समाज द्वारा उचित रूप से भरा जा सकता है।

लगातार जटिल होती शासन-व्यवस्थाओं-प्रक्रियाओं और बढ़ती जन-समस्याओं के बीच सिविल सोसायटी - नागरिक समाज की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता विश्व स्तर पर बढ़ती जा रही है। एक समाज के रूप में हमें नागरिक समाज की आवश्यकता है क्योंकि यह राज्य के अत्याचार के खिलाफ बुनियादी मानवीय जरूरतों की रक्षा करता है।

अल्पसंख्यक, आदिवासी, दलित वर्ग के अधिकारों के साथ-साथ स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों की विधिवत रक्षा नागरिक समाज द्वारा की जाती है। इसमें निर्वाचित नीति-निर्माताओं और प्रशासन के कार्यों को प्रभावित करने की शक्ति होती है। सिविल सोसायटी में ऐसे समूह और संगठन शामिल होते हैं जो नागरिकों की सेवा, सद्भावना, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि जनहित के क्षेत्रों में सरकारी और लाभ क्षेत्रों के बाहर रहकर काम करते हैं। नागरिक जीवन को उन्नत, निष्कंटक, नैतिक, स्वस्थ एवं आदर्श बनाने के लिए ऐसे सिविल सोसायटी समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत में आजादी के तत्काल बाद लोगों के नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को बल देने के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया, यह नागरिक समाज का एक आदर्श उदाहरण है। 'निज पर शासन फिर अनुशासन' के घोष पर चला अणुव्रत आन्दोलन एवं इससे जुड़ी संस्थाएं नागरिक समाज के अनूठे एवं प्रभावी उदाहरण हैं। विश्व पटल पर रेडक्रॉस जैसी संस्था द्वारा स्वास्थ्य एवं शांति का प्रसार किया जा रहा है। इसी तरह, पीस इंटरनेशनल, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन और एसआईपीआरआई आदि निरस्त्रीकरण, शांति और भविष्य के लिए नये वैश्विक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

दुनिया में ऐसी अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान सरकार एवं आर्थिक मोर्चों पर संभव नहीं हो पाया है, इनके लिए सिविल सोसायटी कारगर रही है। भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्ति नागरिक समाज की संगठित शक्ति एवं संघर्ष का ही उदाहरण है।

भारत में सामाजिक लोकतंत्र और उदार लोकतंत्र के लिए लोगों की पूर्ण प्रतिबद्धता सिविल सोसायटी को तेजी से सक्रिय और मजबूत बनाने में मददगार रही है। सूचना का अधिकार जैसा कानून सिविल सोसायटी के लम्बे संघर्ष का परिणाम है जिसने सिविल सोसायटी को अतिरिक्त ताकत दी है। अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने भारत में

सत्ता परिवर्तन में सिविल सोसायटी की भूमिका को रेखांकित किया है।

भारत सरकार ने आने वाले वर्षों में बेहतर जीवन स्तर, समृद्ध अर्थव्यवस्था, शक्तिशाली रक्षा समझौते, सामंजस्यपूर्ण समाज की आशा के साथ नये भारत के भविष्यवादी विचार की रूपरेखा प्रस्तुत की है। नये भारत– सशक्त भारत के निर्माण में नागरिक समाज की प्रभावी भूमिका की जरूरत है। नागरिक समाज की भागीदारी ने स्वच्छ भारत मिशन में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

वैश्विक स्तर पर विभिन्न गैर सरकारी संगठन प्रकृति और जैव विविधता के संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं जो एक स्वस्थ, स्वच्छ और जैविक रूप से सुदृढ़ विश्व के निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका को दर्शाता है। अतीत के चिपको आंदोलन से लेकर आज के अरावली बचाओ और नर्मदा बचाओ अभियान जैसे नागरिक समाज आंदोलन नये भारत के विचार के साथ तालमेल बिठाते हुए एक समान उद्देश्य प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, बहुसंख्यकवादी प्रवृत्तियों को रोकने और विविधता की भावना की रक्षा करने में नागरिक समाज की बड़ी भूमिका है।

अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने भारत में सत्ता परिवर्तन में सिविल सोसायटी की भूमिका को रेखांकित किया है।

पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार उन्मूलन एवं मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए नागरिक समाज को अधिक संगठित, सुनियोजित करने की अपेक्षा है। नागरिक समाज का दृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया बनाना है जहाँ हर कोई अपनी पसंद का जीवन जीये तथा आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र को जवाबदेह बनाया जाये। सिविल सोसायटी की निष्पक्षता और सिद्धांतपरकता इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए आवश्यक है।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी

का 110 वां जन्म दिवस

अणुव्रत दिवस

15 नवम्बर 2023

कार्तिक शुक्ल द्वितीया

संयम के प्रतीक स्वरूप

उ प वा स

आइए! इस दिन उपवास रखकर

संयम को अपने जीवन में प्रतिष्ठापित करें।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

www.anuvibha.org

इस अभियान से जुड़ने के लिए सम्पर्क सूत्र

+91- 91166 34512

+977 984-2055685

अणुव्रत की अलख..

रचयिता : मुख्यमुनि श्री महावीर

अणुव्रत की अलख जगा, धरती को स्वर्ग बनाएँगे।
भारत के गौरव को हम शिखर चढ़ाएँगे।।

मैत्री, अहिंसा के दीप जलाएँ,
क्षमा धर्म अपना सच्ची वीरता दिखाएँ।
आत्मतुल्य सारे प्राणी कभी ना सताएँ,
मानस का कण-कण करुणामय बन जाए।
मुख-मुख पर मुखरित हो अब 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
वसुधा पर विश्वशांति का शंख बजाएँगे।।1।।

संप्रदाय, वर्ण, जाति भले भिन्न-भिन्न हैं,
मानवता के आगे सब भेद छिन्न-छिन्न हैं।
वैर भाव रखकर क्यों नर बने खेद खिन्न है?
आपस में हिलमिल करके रहना प्रसन्न है।
जागृत कर जन-जन मन में सद्भावों की चेतना,
नफरत की दीवारों को तोड़ गिराएँगे।।2।।

सज्जनों की संगति कर गुणों को वरेंगे,
दुर्गण, दुवृत्तियों से दूर रहेंगे।
मद्यपान, जुआ, चोरी कभी ना करेंगे,
सच्चाई की रक्षा हित सब कुछ सहेंगे।
संयम की, सद्गुण की, सत्संस्कारों की सौरभ से,
महकेंगे खुद औरों को भी महकाएँगे।।3।।

ज्ञान के विकास खातिर खूब पढ़ेंगे,
सदाचार साथ रखकर आगे बढ़ेंगे।
उद्यम से उन्नति की हम चोटी चढ़ेंगे,
भावी के भाल पर शुभ भाग्य मढ़ेंगे।
सुधरेगा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र स्वयं सुधरेंगे,
तुलसी की वाणी को सच कर दिखलाएँगे।।4।।

इस लोकप्रिय गीत को सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें। गीत को स्वर दिए हैं पीपाड़ा बहिनों ने..

रिश्तों की मिठास

ताराचंद मकसाने, नवी मुंबई

राजेश्वर प्रसाद ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से बतौर प्रधानाध्यापक रिटायर होने के बाद अपनी दिनचर्या ऐसी बना ली थी कि वे दिनभर व्यस्त रहने लगे। उनकी पत्नी सरला गृहिणी थीं। उनके दोनों बेटे मुंबई में सेटल हो गये थे। बड़े बेटे ने उन्हें स्मार्टफोन के साथ ही लैपटॉप भी दे रखा था, ताकि वे बैंक का काम ऑनलाइन करने के साथ ही बिजली, पानी आदि के बिल भी ऑनलाइन जमा करवा सकें। मगर राजेश्वर को बैंकिंग के कार्यों के लिए बैंक में जाना ही अधिक अच्छा लगता था। बिजली, पानी आदि के बिल भी वे इनके दफ्तर में ही जाकर भरना पसंद करते थे।

राजेश्वर जब कभी अपनी पत्नी के साथ छोटे-से काम से भी बाजार जाते तो रास्ते में दस जगह रुकते थे और बीस जगह जान-पहचान वाले उन्हें रोक लेते थे। महावीर किराना भंडार के पप्पू सेठ उन्हें चाय पिलाये बगैर लौटने नहीं देते थे तो दूधवाला लाला रामेश्वर अपने पोते से दण्डवत प्रणाम करवाने के बाद आशीर्वाद रूपी उनकी

तगड़ी थाप लगने तक उन्हें दुकान की सीढ़ियाँ उतरने नहीं देता था। नुक्कड़ पर पहुँचते-पहुँचते लक्ष्मी मिष्टान्न भंडार के मालिक चंदूभाई की गरमागरम समोसा खाने की मीठी मनुहार के सामने राजेश्वर और सरला को घुटने टेकने ही पड़ते थे।

जिस बैंक में राजेश्वर का खाता था, उस बैंक का एक युवा अधिकारी अमित उनके बेटे की उम्र का था जो बड़े अदब से उनके साथ पेश आता था। एक दिन जब राजेश्वर अपनी पत्नी के साथ बैंक से पैसा निकालने गये तो वहाँ कम भीड़ थी, अमित ने उन्हें अपने पास बैठाया और चाय मँगवायी।

''अंकल, आप दोनों की बढ़ती हुई उम्र को देखते हुए मैं आपको इंटरनेट बैंकिंग की सलाह देना चाहता हूँ ताकि आपको छोटे-छोटे कामों के लिए बैंक आना न पड़े।'' अमित ने कहा।

राजेश्वर मुस्कुराते हुए बोले-''बेटा, हम ठहरे पुराने जमाने के आदमी...। हम अगर अपना सारा काम ऑनलाइन करने लगेंगे तो लोगों से हमारा मिलना-जुलना ही बिल्कुल बंद हो जाएगा। मैं इंटरनेट और डिजिटलाइजेशन के विरोध में नहीं हूँ। सूचना प्रौद्योगिकी ने हमारे बीच की दूरियाँ कम तो की हैं, मगर हमारे सामाजिक रिश्तों के बीच की भौतिक दूरियाँ बढ़ा दी हैं। इससे रिश्तों में मिठास की मात्रा आटे में नमक के बराबर हो गयी है।''

जब राजेश्वर प्रसाद बोल रहे थे तब अमित के बगल में बैठे दो अन्य युवा अधिकारी भी उनकी बातें गौर से सुनने लग गये। उनमें से एक सौमित्र बोला-''अंकल, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, फेसबुक पर मेरे तीन सौ से ज्यादा फ्रेण्ड्स हैं, मगर पिछले साल स्कूटर स्लिप होने से मेरा पैर फ्रैक्चर हो गया था। तब फेसबुक पर मुझे 'गेट वेल सून' के ढेरों मैसेज मिले, पर फेसबुक के एक दोस्त ने भी अस्पताल की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ीं।''

सौमित्र की ओर मुखातिब होकर राजेश्वर बोले-''बेटा समय हो तो एक घटना सुनाऊं..।''

''हाँ, सुनाइए न, अभी तो लंच टाइम चल रहा है, बस अंकल दो मिनट..., मैं समीर को भी बुला लाता हूँ।''

कुछ ही देर में समीर भी आ गया, तीनों राजेश्वर प्रसाद को घेरकर बैठ गये। राजेश्वर ने कहना शुरू किया-''मैं और मेरी पत्नी सरला रोजाना मॉर्निंग वॉक पर जाते हैं। एक दिन सुबह-सुबह कुछ बच्चे आ गये। उनकी गणित की परीक्षा थी, मैं उन्हें पढ़ाने के लिए रुक गया और सरला अकेली मॉर्निंग वॉक के लिए निकल पड़ी। घंटे भर बाद बच्चे चले गये, मैं सरला का इंतजार करने लगा। तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी-''राजेश्वरजी...मैं चंदूभाई बोल रहा हूँ, सरला भाभी मॉर्निंग वॉक करते समय चक्कर आने के कारण गिर पड़ी थीं, उस वक्त मैं और तुम्हारी भाभी मंजु उधर से गुजर रहे थे, लोगों की भीड़ देखकर हम रुक गये, भाभी को देखते ही हम उन्हें अपनी कार से अस्पताल ले गये। भाभी अब बिल्कुल ठीक हैं। हम अस्पताल से रवाना हो रहे हैं..।''

अल्पविराम के बाद राजेश्वर प्रसाद ने कहा-''दरअसल, चंदूभाई की बाजार में मिठाई की दुकान है और वे मेरे पूरे परिवार को बरसों से जानते हैं। हमारा एक-दूसरे के घर आना-जाना होता है। क्या इस तरह के रिश्ते ऑनलाइन शॉपिंग में मुमकिन हैं?''

अमित, सौमित्र और समीर बड़े ध्यान से राजेश्वर प्रसाद की बातें सुन रहे थे। अब तक खामोश बैठी सरला ने घड़ी देखते हुए कहा–''अब लेक्चर देना बंद करो... इन्हें काम भी करने दो।''

राजेश्वर प्रसाद और सरला घर जाने के लिए खड़े हुए तो अमित, सौमित्र और समीर उनके चरण स्पर्श करने के लिए झुके। राजेश्वर ने उन्हें गले लगा लिया। अपने गालों पर लुढ़कते आँसुओं को रूमाल से छिपाने की असफल कोशिश करते हुए वे सरला का हाथ थामकर बैंक की सीढ़ियाँ उतरने लगे। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो अमित, सौमित्र और समीर मुस्कुराते हुए खड़े थे। इन युवाओं की आँखों में उन्हें आश्वस्त करने वाली एक नयी चमक दिखायी दे रही थी।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

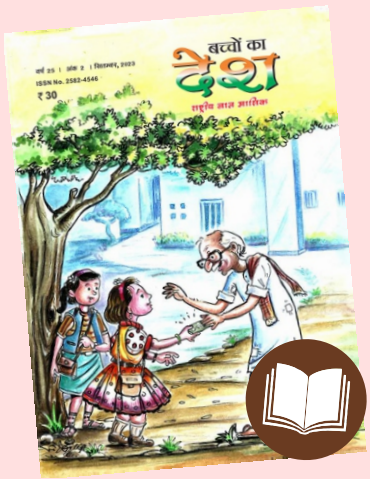

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

इस पत्रिका का नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

15 राज्य **200** शहर **1** लाख बच्चे

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

मुख्य विषय : **असली आजादी अपनाओ**

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण | कविता

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता करवाने की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2023

सम्पर्क करें :

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

9110613732, 91166 34512, 91166 34514,
9841622082, 93007 28836, 98640 32611,
94141 59617, 99265 12363, 98924 67317.

जीवन को जगमग करे..

■ इकराम राजस्थानी, जयपुर ■

मानव सेवा से बड़ा, नहीं है कोई धर्म।
सब धर्मों से श्रेष्ठ है, केवल मानव धर्म।।

अणुव्रत के अनुशास्ता, तुलसी गुरुवर तात।
तुमने दी संसार को, अणुव्रत की सौगात।।

खड़ा हुआ है विश्व में, ले अपनी पहचान।
एटम बम के सामने, अणुव्रत सीना तान।।

जीवन को जगमग करे, सुखमय हो संसार।
मिले अगर सौभाग्य से, अणुव्रत का आधार।।

सभी धर्म रखते जहां, अपने भिन्न विचार।
अणुव्रत में दिखता हमें, सब धर्मों का सार।।

इक दूजे के काम आ, मन से मन को जोड़।
जिससे टूटे देश वो, तोड़फोड़ तू छोड़।।

गुरुवर तुलसी ने किया, अद्भुत आविष्कार।
एटम बम के सामने, अणुव्रत का हथियार।।

विश्वयुद्ध के द्वार पर, आ पहुँचा संसार।
अणुव्रत ही कर पाएगा, अब तो बेड़ा पार।।

वैज्ञानिक तो गढ़ रहे, एटम बम का अस्त्र।
तुलसी ने हमको दिया, अणुव्रत का ब्रह्मास्त्र।।

मानवता कैसे बचे, इसका एक विकल्प।
आओ मिलकर लें सभी, अणुव्रत का संकल्प।।

एटीएम कार्ड

अशोक अंजुम, अलीगढ़

पिताजी बहुत कंजूस हैं। घर के सदस्यों का ही नहीं बल्कि रिश्तेदारों और परिचितों में अधिकतर का यही मानना है। बैंक अधिकारी के पद से रिटायर हुए थे पिताजी। अच्छी-खासी पेंशन मिलती है। सब पैसा बैंक में ही इकट्ठा करते रहते हैं। उन्हें लगता है कि अगर बुढ़ापे में दोनों लड़कों ने धोखा दे दिया तो यह धनराशि उनके काम आएगी।

उनके दोनों बेटे प्राइवेट नौकरी में हैं। घर का अधिकांश खर्च बड़े बेटे के जिम्मे है। छोटा बेटा भी यथासामर्थ्य सहयोग करता है। आपस में दोनों भाइयों में बहुत प्यार है। दोनों पिताजी की जमा राशि से कोई वास्ता नहीं रखते।

अचानक बड़े बेटे को ऐसी गंभीर बीमारी हो गयी कि उसे दिल्ली के एक बड़े अस्पताल में भर्ती कराने की नौबत आ गयी। बड़े बेटे की पत्नी परेशान कि इलाज का खर्च कहाँ से जुटाये। ...कि छोटा भाई आकर बोला, ''भाभी, खर्च की चिंता मत कीजिए। पिताजी ने अपना एटीएम कार्ड देकर मुझसे कहा है कि चाहे कितना भी खर्च हो जाये, 'बड़के' को सही-सलामत घर लेकर आना है।''

गौरवशाली अतीत के झरोखे से

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ ''मेरा जीवन : मेरा दर्शन।''

भ्रान्तियां और आशंकाएं

आचार्य श्री तुलसी अब राजलदेसर से श्रीडूंगरगढ़ जाना था। मर्यादा महोत्सव मनाना था। मर्यादा महोत्सव के दिन मुख्य कार्यक्रम में पहले संस्कार निर्माण समिति की ओर से 'हरिजन सम्मेलन' का आयोजन निर्णीत था। श्रीडूंगरगढ़ के कुछ भाई आचार्यश्री तुलसी के पास आये और बोले- ''शहर में 'हरिजन सम्मेलन' की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं है। ऐसी स्थिति में हमारे लिए कठिनाई पैदा हो जाएगी।''

आचार्य श्री तुलसी ने उनको समझाते हुए कहा-''कोई कुछ भी सोचे और कुछ भी कहे, अस्पृश्यता निवारण मेरा धर्म है। यह काम मुझे करना है, इसलिए करता रहूँगा। सम्मेलन जरूर होगा और बड़ी शान से होगा।'' श्रीडूंगरगढ़ के लोगों पर बड़ा अच्छा असर हुआ। उनका मनोबल मजबूत बन गया।

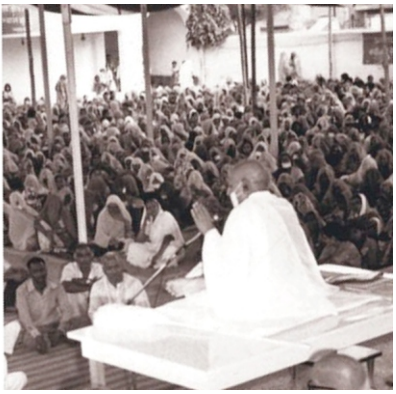

विराट हरिजन सम्मेलन

18 फरवरी का मंगलमय प्रभात। ताल मैदान में मर्यादा महोत्सव के लिए निर्मित पण्डाल में हरिजन सम्मेलन का आयोजन। बीकानेर से संसद सदस्य महाराजा करणीसिंह समय पर पहुँच गये। उन्होंने अच्छा वक्तव्य दिया। सेवाभावी मुनि चम्पालालजी, मोहनलाल जैन आदि कई वक्ता बोले। उत्तमचन्द सेठिया सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। अस्पृश्यता के बारे में काफी लोग भ्रान्त थे। आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें बताया कि अस्पृश्यता मानवता का कलंक है। कोई भी मनुष्य जाति से नहीं, कर्म से श्रेष्ठ बनता है। पूरा कार्यक्रम बहुत शालीन ढंग से सम्पन्न हुआ। कुछ व्यक्तियों द्वारा बीच में विघ्न डालने के अनेक प्रयत्न किये गये, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। आचार्यश्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं के सम्पर्ण भाव को सराहा और कहा कि मोहनजी जैन में गजब की शक्ति है। उन्हें कुछ साथी भी ऐसे ही मिल गये। कुल मिलाकर हरिजन सम्मेलन सफल हो गया।

विकास में बाधक बुराइयां

21 अगस्त को अस्पृश्यता निवारण एवं शराबबन्दी सम्मेलन को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा-''छुआछूत और मदिरा भारत जैसे धर्मप्रधान व अध्यात्मप्रधान देश के लिए सबसे बड़ा कलंक है। जब तक ये दोनों बुराइयां जड़-मूल से समाप्त नहीं होतीं, तब तक

समाज व राष्ट्र के विकास का पथ प्रशस्त नहीं होगा। छुआछूत की भावना ने मानव समाज के बीच भेदभाव की दीवार खड़ी कर दी और मद्यपान की प्रवृत्ति ने समाज में अनेक बुराइयों को जड़ जमाने के लिए जमीन तैयार कर दी। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अणुव्रत इस दिशा में काम कर रहा है। उसमें सब लोगों की संभागिता हो, यह जरूरी है।''

मुख्य अतिथि राजस्थान के वित्तमंत्री मास्टर आदित्येन्द्र ने छुआछूत और शराब के दुष्परिणामों की चर्चा की। स्थानीय विधायक माणकचन्द सुराणा, स्वामी प्रकाशनाथ, डॉ. महावीरराज गेलड़ा और संस्कार निर्माण समिति के मंत्री मोहनलाल जैन ने भी विचार व्यक्त किये। समिति की ओर से शराबबन्दी प्रदर्शनी का भी आयोजन था, जिसका उद्घाटन वित्तमंत्री महोदय ने किया।

अणुव्रत है एक दीया

भारतीय संस्कार निर्माण समिति आचार्य श्री तुलसी के चरित्र विकास के कार्यक्रम में पूरी तरह से सक्रिय थी। 16 फरवरी को अपनी दिल्ली यात्रा के बीच आचार्यश्री चूरू गये थे। उसी दिन से संस्कार निर्माण समिति ने शराबबंदी यात्रा प्रारंभ कर दी। समिति के मंत्री मोहनजी जैन स्वयं पदयात्रा करते थे। इक्कीस दिनों की यात्रा में दस हजार से अधिक संकल्प पत्र भरवाये गये। मोहनजी प्रतिदिन एक सौ संकल्प पत्र भरे जाने के बाद एक पाव दूध लेते और पाँच सौ संकल्प पत्र भरने पर ही भोजन करते थे। उनके इस संकल्प का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आचार्य श्री तुलसी का चिन्तन था कि मानवीय चरित्र को धूमिल या दूषित करने वाली प्रत्येक बुराई को समाप्त करने के लिए इस प्रकार के अभियान चलाये जाये तो एक सीमा तक वह निश्चित रूप से दूर हो सकती है। अणुव्रत संसार भर की सब बुराइयों को मिटाने का दावा नहीं करता, पर चरित्रहीनता के सघन अंधकार में वह दीया बनकर जरूर

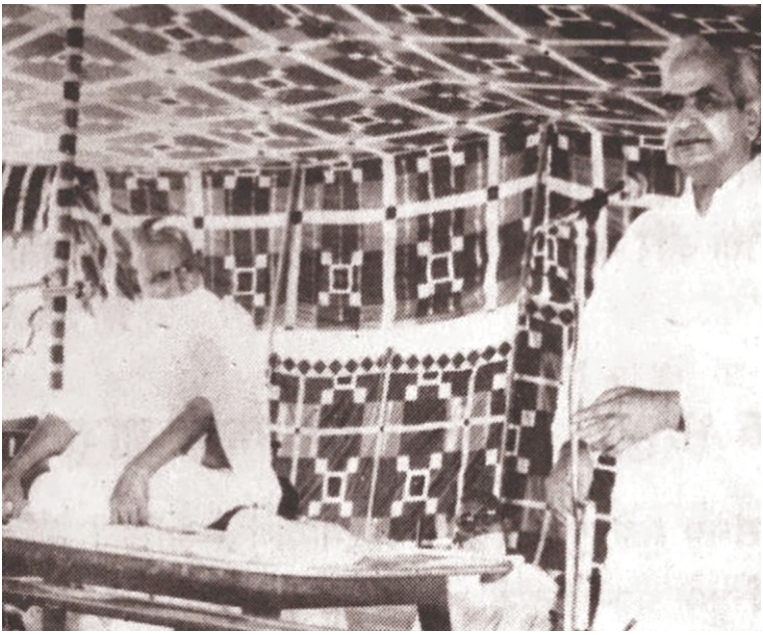

टिमटिमाता रहेगा। उसकी मद्धिम रोशनी में जो लोग अपना रास्ता खोज लेंगे, वे मंजिल तक पहुँच जाएंगे।

मद्यनिषेध पदयात्रा

आचार्य श्री तुलसी जहाँ भी प्रवास करते, अपने प्रवचन में अणुव्रत की चर्चा करते तथा व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते। अनेक गाँववासी शराब का परित्याग करते। 8 जून को आचार्य श्री तुलसी सांडवा गये। यहां आचार्यश्री तीन दिन रहे। भारतीय संस्कार निर्माण समिति के संयोजक मोहनलाल जैन और उनके सहयोगी सांडवा पहुँचे। आचार्यश्री की यात्रा के साथ वे भी मद्यनिषेध पदयात्रा करना चाहते थे। आचार्यश्री का मानना था कि मदिरा पीने वाले व्यक्ति भीतर बाहर दोनों ओर से अपनी चेतना को मूर्च्छित कर लेते हैं। जिस व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा राष्ट्र में शराब का नशा लग जाता है, वहाँ बहुमुखी पतन का रास्ता खुल जाता है। भारतीय संस्कार निर्माण समिति ने शराबबन्दी का कार्य अपने हाथ में लिया है और उसे प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ा रही है। यह अभियान अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो, ऐसा प्रयत्न सब लोगों को मिल-जुलकर करना है।

नैतिकता के स्वर गूँज उठते

आचार्य श्री तुलसी की अणुव्रत यात्रा का उद्देश्य था चरित्र-निर्माण। आचार्यश्री जहाँ भी जाते, प्रवचन करते, वहाँ नैतिकता के स्वर गूँज उठते। संस्कार-निर्माण की गोष्ठियाँ चलतीं। स्कूलों के सैकड़ों विद्यार्थी इन गोष्ठियों में भाग लेते। कार्यकर्ता स्कूलों में जाकर अणुव्रत की चर्चा करते। यात्रा में साथ रहने वाली बहनें झोपड़ी-झोपड़ी में जाकर ग्रामीण बहनों को रूढ़िमुक्त जीवन जीने की सलाह देतीं। मोहनलाल जैन द्वारा ग्रामीण लोगों को अणुव्रत प्रदर्शनी दिखायी जाती। उन्हें व्यसनमुक्त होने की प्रेरणा मिलती।

9 अप्रैल को मोहनजी जैन ने आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किये। वे संस्कार निर्माण समिति के कार्य को गति देने के लिए उत्साहित थे। आचार्य श्री तुलसी ने उनको परामर्श दिया कि लाडनूं को सघन क्षेत्र बनाकर आसपास के गाँवों को सुधारा जाये तो ठीक रहेगा। मोहनजी ने इस परामर्श को स्वीकार कर लिया। आचार्यश्री ने विश्वास जताया कि अच्छा काम हो सकेगा।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्स एप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न को क्लिक करें

समाज निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका

जुलाई अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक

सिविल सोसायटी जैसे संगठन जनता से जुड़कर उसकी वास्तविक इच्छा को सरकार के सामने रखते हैं और शासन में भागीदारी को प्रोत्साहित कर सुशासन की अवधारणा सुनिश्चित करते हैं। 'सूचना का अधिकार' कानून सिविल सोसायटी के आन्दोलन का ही परिणाम है। समाज में नैतिक मूल्यों की भी स्थापना करने में भी ये सहायक बनते हैं।

– **जीवन एस दानू इरेश**, बागेश्वर

समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक

सिविल सोसायटी वस्तुतः संवेदनशील लोगों का समूह होती है, जो जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। ये समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं। सिविल सोसायटी मानवाधिकारों की अवहेलना के खिलाफ भुक्तभोगियों का साथ देते हैं और उन्हें न्याय दिलवाने में सहायक बनते हैं, गरीब और उपेक्षित लोगों को हर किस्म की सहायता और सुविधा उपलब्ध कराते हैं।

–**डॉ. कविता विकास**, धनबाद

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों सापेक्ष विषय हैं। व्यक्ति ही समाज का प्रतिबिंब है, समाज ही राष्ट्र का स्वरूप। यदि सिविल सोसायटी का चिंतन, व्यवहार, कृत्य समाज एवं राष्ट्रपरक होंगे तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी प्रगति, शांति, खुशहाली, संतोष, आनंद, परमानंद की ओर बढ़ेंगे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में - ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा''।

-डॉ. मनोहर भारती, मैसूर

सहकारिता को बनाती हैं सामाजिक जीवन का अंग

सत्ता का अर्थ है सुशासन अर्थात् नागरिकों की सेवा करने की क्षमता जिसके द्वारा संसाधन एवं शक्ति का प्रयोग समाज के विकास एवं कल्याण के लिए किया जाता है, लेकिन सुशासन की सबसे बड़ी बाधा है भ्रष्टाचार। जब चारों ओर केवल भ्रष्टाचार हो और व्यक्तिगत प्रयासों से बात नहीं बनती हो तो सुशासन को अमल में लाने के लिए नागरिक समाज का जन्म होता है। ये सामूहिकता को बढ़ावा देकर सहकारिता को सामाजिक जीवन का अंग बनाते हैं।

-डॉ. पंकज कुमार समदरिया, सालमारी, कटिहार

समाज में चेतना जागृत करने में मददगार

सिविल सोसायटी सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक चेतना जागृत करती हैं। सरकारी विभागों में कार्य संचालन को पारदर्शी बनाती हैं। योजनाओं, प्रशासन और नीति निर्माण के क्रियान्वयन में जन सहभागिता सुनिश्चित करती हैं। ये प्रशासनिक मशीनरी पर जवाबदेही लागू कर स्थानीय विकास के लिए स्थानीय संसाधन विकसित करके समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

-कल्पना सेठिया, नयी दिल्ली

पीड़ितों को अपनापन का कराती है एहसास

सिविल सोसायटी यानी विषम हालात में पीड़ितों को संभालते हुए उन्हें अपनेपन का एहसास करवाना कि 'हम हैं न'। जब कोविड की वजह से घर-घर मातम पसरा हुआ था, परिवार वाले तक दूरियाँ बरतने लगे थे, तब मानवता के लिए समर्पित कुछ व्यक्ति सहयोग के लिए आगे आये। ये वही लोग हैं जो विभिन्न सामाजिक संस्थानों के सदस्य हैं। हम भी इन अच्छाइयों भरी बगियाओं के कुसुम बनकर जग को महकाते हुए आम से खास बनें।

-**प्रतिभा जोशी**, अजमेर

आगामी परिचर्चा का विषय

आम नागरिक के जीवन में संयम का महत्व : प्रयोग और परिणाम

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से एक सामान्य इंसान के जीवन में संयम को स्वभाव के रूप में शामिल करने का युगांतकारी सफल प्रयास किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर 15 नवम्बर 2023 को हम आचार्य तुलसी का 110वां जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मना रहे हैं। इस दिन संयम के अभ्यास स्वरूप हजारों व्यक्ति उपवास रखेंगे। क्या है संयम का हमारे दैनंदिन जीवन में महत्व? अपनी जीवनशैली में कैसे हम संयम के छोटे-छोटे प्रयोग शामिल कर सकते हैं? और, इन प्रयोगों के क्या परिणाम हस्तगत होते हैं?

अपने अनुभवजन्य विचार हमें 200 शब्दों में 30 सितम्बर तक निम्न व्हाट्सएप नंबर पर भेजें। चयनित विचार नवम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

9116634512

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर 2023

01 अक्टूबर	सांप्रदायिक सौहार्द दिवस
02 अक्टूबर	अहिंसा दिवस
03 अक्टूबर	अणुव्रत प्रेरणा दिवस
04 अक्टूबर	पर्यावरण शुद्धि दिवस
05 अक्टूबर	नशामुक्ति दिवस
06 अक्टूबर	अनुशासन दिवस
07 अक्टूबर	जीवन विज्ञान दिवस

अणुविभा

अणुव्रत आंदोलन

74वां अणुव्रत अधिवेशन

18, 19 व 20 नवम्बर, 2023 | नंदनवन, मुंबई

पावन सान्निध्य :

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी

बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बना किडजोन

खेल-खेल में निखार रहे हुनर, सीख रहे ज्ञान की बातें

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास प्रवास स्थल पर अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में संचालित किया जा रहा किडजोन आमजन और बच्चों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

यहाँ थिएटर रूम में बच्चों को आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर बनी डॉक्यूमेंट्री के साथ ही नैतिक मूल्यों पर आधारित छोटी-छोटी फिल्में दिखायी जाती हैं। योगा रूम में होलोग्राम टेक्नोलॉजी के माध्यम से जीवन विज्ञान के प्रयोग भी करवाये जाते हैं। बच्चे यहाँ बुक्स रीडिंग, ड्राइंग, जंपिंग, कैरम, चेस के साथ ही खेल-खेल में बहुत कुछ सीख भी रहे हैं।

बच्चों को अणुव्रत साँप-सीढ़ी के माध्यम से रोचक जानकारियां भी दी जाती हैं। संडे वर्कशॉप स्पेशल के तहत उन्हें तरह-तरह के हुनर सिखाये जाते हैं। स्वतंत्रता दिवस पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में रानी लक्ष्मी बाई, अहिल्या

बाई, भगत सिंह, भारत माता जैसी वेशभूषा में सजे बच्चों ने असली आजादी पर अपने भाव प्रस्तुत किये। लगभग 150 बच्चों ने तिरंगे झंडों के साथ किडजोन से पंडाल में गुरुदेव के मंच तक रैली निकाली। टॉप सात बच्चों को गुरुदेव के सामने प्रस्तुति देने का सुअवसर भी मिला। गुरुदेव ने बच्चों के साथ लगभग 10 मिनट बिताये तथा कई बच्चों की प्रस्तुति भी बड़े ध्यान से सुनी।

मुनिश्री दिनेश कुमार, अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार एवं 'एलिवेट' नशामुक्ति प्रकल्प के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री अभिजीत भी अवलोकन हेतु किडजोन में पधारे। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, प्रभारी उपाध्यक्ष विनोद कोठारी एवं संयोजक मनोज सिंघवी ने किडजोन के स्वरूप तथा भावी कार्यक्रमों के संदर्भ में विचार-विमर्श कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किये।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण को 'अणुव्रत अमृत किट' भेंट

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण को अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने 'अणुव्रत अमृत किट' भेंट की। आचार्यप्रवर ने समस्त सामग्री को गौर से देखा और अणुव्रत अमृत महोत्सव की गति-प्रगति की जानकारी प्राप्त की। 'अणुव्रत अमृत किट' में विभिन्न अणुव्रत प्रकल्पों के ब्रोशर, अणुव्रत आंदोलन की परिचय पुस्तिका, अणुव्रत अमृत महोत्सव के

करणीय कार्यों की दिशादर्शिका, अणुव्रत जीवनशैली मार्गदर्शिका, अणुव्रत डायरी, स्वागत दुपट्टा जैसी महत्वपूर्ण सामग्री नमूने के रूप में शामिल हैं।

अविनाश नाहर एवं अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने आचार्यप्रवर को अमृत महोत्सव के अंतर्गत चल रहे विभिन्न प्रकल्पों की विस्तार में अवगति प्रदान की। इससे पूर्व अणुविभा कार्यसमिति की मुंबई बैठक में किट का अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर द्वारा लोकार्पण किया गया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में 700 स्कूलों ने कराया रजिस्ट्रेशन

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अनेकानेक प्रकल्प संचालित किये जा रहे हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट'। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन एवं अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक प्रताप दुगड़ के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 के तहत 20 अगस्त तक देश भर के 700 से अधिक स्कूलों का रजिस्ट्रेशन हो गया है।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 के राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत ने बताया कि देश भर से एक लाख से अधिक बच्चों को अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 में सहभागी बनाने का लक्ष्य है।

अणुव्रत गीत जीवन की प्रार्थना बने : कटारिया

कोलकाता में राज्यस्तरीय सेमिनार का आयोजन

कोलकाता। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा 13 अगस्त को कला मंदिर में 'आजाद भारत की प्रगति में अणुव्रत का योगदान' विषय पर राज्यस्तरीय अणुव्रत सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि देश न केवल सड़कों व इमारतों से बनता है, वह बनता है इंसानों से। देश को बनाना है तो नैतिकता ही एकमात्र मानदण्ड है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत गीत की रचना कर अणुव्रत का संदेश इस देश को दिया। व्यक्ति सुधार से समाज सुधार और समाज सुधार से राष्ट्र का सुधार संभव है। अणुव्रत गीत में यह संदेश दिया गया है। अणुव्रत गीत जीवन की एक प्रार्थना होनी चाहिए। इसकी पंक्ति 'संयममय जीवन हो' को ही अपना लें तो हमारे जीवन का उत्थान संभव है। आप सभी अणुव्रत के द्वारा समाज सुधार का प्रयत्न करते रहें।

मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा कि अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं, अपितु पूरा जीवन दर्शन है। अणुव्रत क्रियाकाण्डों पर नहीं, बल्कि चरित्र-शुद्धि पर ध्यान देता है। नशा नाश का द्वार है, नशे से मुक्त रहना चाहिए।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत

अणुविभा के तत्वावधान में कोलकाता अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत सेमिनार में असम के राज्यपाल श्री गुलाबचंद कटारिया का वक्तव्य सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..

अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक प्रसंग में अणुविभा द्वारा देश-विदेश में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत दर्शन को जीवन में अपना लिया जाये तो देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं का समाधान हासिल किया जा सकता है। इससे पहले अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने स्वागत भाषण दिया।

एलिवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई

बड़ी संख्या में युवा ले रहे नशामुक्ति का संकल्प

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 17 जून 2023 को 'एलिवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई' नशामुक्त जीवन अभियान का आगाज किया गया था। यह अभियान युवा पीढ़ी के लिए आशा और प्रेरणा की किरण है। इस अभियान का उद्देश्य नशामुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देने के साथ नशा से होने वाली हानियों के प्रति जागरुकता पैदा करना और स्वस्थ जीवन जीने के लिए वातावरण का निर्माण करना है।

पिछले महीने टीम ने 16 स्कूलों का दौरा किया। इस दौरान 2800 छात्रों ने नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। अभियान को मुनिश्री अभिजीत कुमार का आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा सह संयोजक मुदित भंसाली का विशिष्ट सहयोग प्राप्त हो रहा है।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 68 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी	–	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :